SEIL द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा 2023 के समापन समारोह में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का अभिभाषण

दिनांक 20 नवंबर 2023, सोमवार	समय : 5.00 PM	स्थान : कॉटन विश्वविद्यालय

- असम के माननीय मंत्री श्री जयंत मल्ल बरुवा जी,
- अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय आयोजन सचिव श्री आशीष चौहान जी,
- कॉटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चंद्र डेका जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- विद्यार्थी परिषद और सील (SEIL) के सम्मानित सदस्य एवं कार्यकर्तागण,
- मेरे प्यारे विद्यार्थियों,
- मीडिया के हमारे मित्रों,
- देवियों और सज्जनों,

नमस्कार,

अंतर-राज्य छात्र जीवन दर्शन (SEIL) द्वारा आयोजित "राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा" के समापन समारोह में आप सभी के बीच उपस्थित होकर बहुत प्रसन्नता हो रही है। इस कार्यक्रम में मुझे आमंत्रित करने के लिए मैं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद को धन्यवाद देता हूं।

सर्वप्रथम मैं राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा के अंतर्गत पूर्वोत्तर राज्यों का भ्रमण कर लौटे छात्र-छात्राओं का अभिनंदन करता हूं। आपने 15 दिनों तक पूर्वोत्तर के विभिन्न जगहों की यात्रा की और वहां की कला, संस्कृति, भाषा आदि के बारे में जाना। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपने पूर्वोत्तर भारत की विविधता को प्रत्यक्ष जाना, समझा और अनुभव किया होगा।

मित्रों,

"अंतर-राज्य छात्र जीवन दर्शन" (SEIL) अखिल भारतीय विद्‌यार्थी परिषद की एक अभिनव प्रकल्प है। विविधता में एकता के मूल मंत्र को लेकर 1966 में परिषद् के कार्यकर्ताओं ने देश के दूर दराज सीमावर्ती क्षेत्रों के बीच भावनात्मक एकता को बढ़ावा देने के उद्‌देश्य से इस प्रकल्प की शुरुआत की थी। SEIL के नाम से देश भर में परिचित यह प्रकल्प अत्यन्त सरल, पर प्रभावी है।

इस प्रकल्प के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष एक यात्रा आयोजित की जाती है, जिसमें पूर्वोत्तर के सभी राज्यों से प्रतिनिधि भाग लेते हैं। इसी प्रकार से भारत के विभिन्न राज्यों के युवा प्रतिनिधि भी SEIL यात्रा के अन्तर्गत पूर्वोत्तर राज्यों की यात्रा करते हैं।

मुझे बताया गया है कि अब तक आयोजित 25 से ज्यादा राष्ट्रीय एकात्मता यात्राओं के माध्यम से हजारों प्रतिभागियों और देश के अन्य स्थानों पर निवास करने वाले इनके यजमान परिवारों का ध्यान पूर्वोत्तर की ओर आकृष्ट किया है। सुनियोजित यात्राओं के बीच होने वाला विचारों का यह मंथन जीवनभर के संबंधों में परिवर्तित हुआ है।

यह यात्रा, भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है। एक लंबे समय से आयोजित हो रही इस यात्रा के माध्यम से हजारों युवाओं को देश को जानने का अवसर मिला है। इन युवाओं के माध्यम से यात्रा में मिलने वाले लोगों को भी पूर्वोत्तर के बारे में जानने का मौका मिला है।

राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा 'अनेकता में एकता - भारत की विशेषता' के प्रत्यक्ष भाव की यात्रा है। यह दर्शन और अनुभव करने की यात्रा है। मात्र पर्यटन इस यात्रा का उद्देश्य नहीं है। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान है। यह देश में बंधुत्व की भावना को सुदृढ़ करने की यात्रा है। आज के युवाओं को भारत को जानने का और स्वयं की संस्कृति, संस्कार को समझने की आवश्यकता है और इस दिशा में यह यात्रा महत्वपूर्ण है।

देश का पूर्वोत्तर क्षेत्र अत्यंत सुंदर एवं विविधता से भरपूर है। इस क्षेत्र में 220 से अधिक जातियां हैं, जिसमें से 166 से भी अधिक विभिन्न जनजातियां निवास करती हैं। इनमें से अधिकांश समुदायों की भाषा, बोली और संस्कृति भी भिन्न है। भिन्नता के बावजूद यहां लोग मिलजुल कर रहते हैं, जो अनेकता में एकता के भाव को चरितार्थ करता है। पिछले 15 दिनों तक आपने यहां की कला, संस्कृति, सामाजिक सभ्यताओं के बारे में जाना और अनुभव किया।

मित्रों,

भ्रमण से लोगों को बहुत लाभ होता है। भ्रमण से जो हम सीखते हैं, उसे पुस्तकों से सीखना कठिन होता है, क्योंकि सीखने में आँख की भूमिका अन्य ज्ञानेन्द्रियों की तुलना में सबसे अधिक होती है। भ्रमण हमारे किताबी ज्ञान में वृद्धि करता है। ऐतिहासिक महत्त्व के स्थानों के भ्रमण से पुस्तकों में पढ़ी धुँधली छवि प्रकाशित होकर साकार हो जाती है।

भ्रमण संसार के व्यावहारिक ज्ञान को प्राप्त करने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है। इससे हमारा दृष्टिकोण विस्तृत होता है। हमारे विचारों और दृष्टिकोण में उदारता आती है। हमारे मन में मानवता के प्रति सहानुभूति जागृत होती है।

विविध प्रकार का अनुभव पाकर हम घटनाओं और वस्तुओं को एक नई दिशा से देखना सीख जाते हैं। इससे मूल्यों के प्रति हमारा सही दृष्टिकोण विकसित होता है।

भ्रमण से हम प्रकृति की गोद में पहुंचते हैं। विभिन्न भाषाओं की पुस्तकों में अनेक विद्वानों के प्रकृति वर्णन को पढ़कर हम बड़े प्रभावित होते हैं, लेकिन भ्रमण द्वारा वही सब हमारे सामने साकार होकर मंत्रमुग्ध कर देता है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि युवाओं को भ्रमण के समुचित अवसर उपलब्ध कराने चाहिए।

मुझे खुशी है कि इस क्षेत्र में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद SEIL परियोजना के तहत महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। देश की आजादी के बाद से ही यह छात्र संगठन राष्ट्र के विकास में संकलिप्त और समर्पण भाव से उल्लेखनीय योगदान दिया है। इस छात्र संगठन ने अनगिनत मोर्चे पर अपने महत्व को रेखांकित किया है।

एक समय भारत समृद्ध संस्कृति के साथ विश्व गुरु और सोने की चिड़िया कहलाता था। धीरे-धीरे अनेक विदेशी आक्रमणों ने भारत को खंडित करने का कार्य किया। स्वतंत्रता मिलने तक प्राचीन भारत के कई भूभाग अलग हो चुके थे और सांस्कृतिक स्तर पर हमें गहरी चोट मिली थी।

एक खंडित राष्ट्र को नए सिरे से तैयार करने के ध्येय के साथ ही परिषद ने कदम बढ़ाया। परिषद ने तीन प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से प्रयत्न प्रारंभ किया- रचनात्मक, आंदोलनात्मक और प्रतिनिधित्वात्मक। इन्हीं तीन प्रकार की गतिविधियों को आधार बनाकर परिषद ने अपनी सैद्धांतिक भूमिका अपनाई थी। अब परिषद "जागरूकता", "एकात्मता" और "स्वालंबन" के त्रि-सूत्री लक्ष्य को लेकर कार्य कर रही है।

शैक्षिक-परिवार की बात करते समय छात्रों, अध्यापकों और शिक्षाविदों को एक साथ जोड़ने की संगठन की पहल भी इस यात्रा में निर्णायक सिद्ध हुई है। इस विशेष यात्रा के आयोजन के लिए मैं विद्यार्थी परिषद का एक बार फिर धन्यवाद देता हूं। आप सभी युवाओं से अपेक्षा करता हूं कि इस यात्रा से प्राप्त अनुभव अपने परिजनों एवं मित्रों से साझा करेंगे और एक भारत श्रेष्ठ भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में योगदान देंगे।

अंत में मैं यात्रा में भाग लेने वाले सभी युवा प्रतिभागियों और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद को राष्ट्र निर्माण एवं विकास के उनके कार्यों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद।

जय हिन्द।